कृषक भी हैं आज के भगीरथ

डॉ दीपक हरि रानडे
भगवंत राव मंडलोई कृषि महाविद्यालय,
खंडवा

धरती प्यासी, जग प्यासा, प्यासे सारे लोग,
प्राणी प्यासे, पौधे प्यासे, रोकूँगा वो आवेग,
साधूँगा प्रवाह, सहेजूँगा हर बूँद, बाँधूँगा कई बांध,
बूँद–बूँद का उपयोग करूँगा, थामुँगा हर मृदा कण को,
रखूंगा फसल हर खेत में, सहेजूँगा हर बूंद क्षेत्र में,
उतरेगी हर बूंद भूमि में, सहेजूंगा पातल में भी,
जीवन दायनी बनेगी, बन गंगा निर्मल,
की थी यह भगीरथ प्रतिज्ञा, किया घनघोर तप,
किया गंगा माँ का जप, शिव जटा से उतरी गंगा,
यह भगीरथ प्रयास, इसे सहेजना अब हर एक का कर्तव्य,
कृषक भी हैं आज के भगीरथ,
वर्षा जल सहेजने का हर प्रयास करता,
मिट्टी और खेत ढलान देख फसलों का नियोजन करता,
करते, ग्रीष्म ऋतु में गहरी जुताई, गहरी काली मिट्टी में,
तीन साल में कर ही देते मिट्टी उथल पुथल,
स्वयं तपते तेज सूर्य प्रकाश में,
साथ ही खेत को तपा उसकी क्षुधा बड़ाते,
बारिश की पहली बूँद ही, उतरती भू गहराई तक,
समय फिर बखर पाटा चला, करते खेत तैयार,
पर्याप्त नमी में, बोते मक्का, तिल, ज्वार,
बोते इस तरह कि, फसल उगे ढाल के विपरीत,
निश्चित अन्तराल पर, खेत में छोटी छोटी, ढलाउदार मेड़ बनाते,
यथा संभव, यथा स्थान जल संरक्षण का प्रयास करते,
इस अवरोध से खेत से कम अपवाह होता,
मृदा कण सहेजता, मंद गति से बहकर भूमि में उतरता,
बहता मंद गति से, होता सुरक्षित गति से निकास,
समय समय पर सस्य क्रिया अपनाकर, खेत में पर्याप्त नमी बनाये,
फिर भी अगर अधिक जल अपवाह होता,
रखते उसे संरक्षित, जल संग्रहण या रिसन तालाबों में,
भगीरथ ने जो प्रयास किया और प्रण किया,
वही सार्थक कर रहा हर किसान,
भगीरथ तो थे जलदाता, साधी थी शिवजी ने जलधारा,
अवतरित हुई गंगा माँ इस धरा पर,
कृषक भी है अब आधुनिक भगीरथ,
कर रहा समुचित वर्षा जल प्रबंधन,
अन्नदाता के साथ–साथ वो है जलदाता,
उसके प्रयासों से ही, हो रहा भूजल भरण,
नदी नालों में जा रही कम गाद,
ऐसे भगीरथ, जुझारू कृषकों को, हमारा बारम्बार प्रणाम।